जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मई 2024 ।। अंक – 46 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

रीना देवी को मिला
समूह से सहारा
(पृष्ठ – 02)

आइसक्रीम फैक्ट्री ने
दिया रोजगार
(पृष्ठ – 03)

बैंक सखी से गांवों में
आसानी से
मिल रही हैं बैंकिंग सेवाएँ
(पृष्ठ – 04)

लोकतंत्र को मजबूत करने में सार्थक भूमिका निभा रही हैं जीविका दीदियाँ

घर की चौखट लाँघकर, वोट देने जाना है। रूके नहीं, थके नहीं....वोट देने बढ़ें हम...। कर्त्तव्य वोट का.... अधिकार लोकतंत्र का.... जैसे नारों और गीतों से बिहार का हर गाँव–गली और मोहल्ला गूंज उठा है। लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करने, अपने मताधिकार का प्रयोग करने तथा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने की दिशा में जीविका दीदियाँ अपनी सार्थक भूमिका निभा रही हैं। इसके लिए वे अपने–अपने गाँवों और टोले में निरंतर मतदाता जागरूकता अभियान चला रही हैं। घर–घर दस्तक देकर उन्हें मतदान कर लोकतंत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान कर रही हैं।

मतदाता जागरूकता अभियान

दरअसल आम नागरिक अपनी लोकतांत्रिक प्रणाली और कर्तव्यों को लेकर जितने सजग एवं जागरूक होंगे, देश का लोकतंत्र उतना ही मजबूत होगा। मतदान एक ऐसी ताकत है, जिससे हम अपने देश को बदल सकते हैं। यह तभी संभव है जब हम अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। यही कारण है कि लोक सभा आम निर्वाचन– 2024 में मतदान प्रतिशत बढ़ाने हेतु सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता अर्थात स्वीप के तहत मतदाता जागरूकता के साथ–साथ मतदान प्रतिशत में वृद्धि करने हेतु कई प्रकार के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है।

स्वीप के तहत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन में जीविका दीदियाँ अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। इसमें मुख्य रूप में प्रभात फेरी, जागरूकता रैली, मतदाता शपथ, परिचर्चा, चुनावी चौपाल, संकल्प सभा, रंगोली, मेहंदी, मानव श्रृंखला, कैंडल मार्च और हस्ताक्षर अभियान के अलावा जीविका दीदियों द्वारा घर–घर दस्तक देकर लोगों को शत–प्रतिशत मतदान करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। खास बात यह है कि इन गतिविधियों में बड़ी संख्या में जीविका दीदियों के अलावा ग्रामीण एवं बच्चे भी भाग ले रहे हैं। जीविका महिला ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ के नेतृत्व में बिहार के तमाम गाँवों में मतदाता जागरूकता रैली निकाली जा रही है। रैली के माध्यम से लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इस दौरान जीविका दीदियाँ निश्चित मतदान करने का संकल्प ले रही हैं और दूसरों को भी 'सबसे पहले मतदान' करने की शपथ दिलवा रही हैं। जीविका दीदियाँ आकर्षक रंगों से सजी रंगोली बनाकर और अपने हाथों में मेहंदी रचकर प्रेरक नारों एवं गीतों के साथ मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। साथ ही साथ मानव श्रृंखला बनाकर लोकतंत्र में लोगों की भागीदारी का पाठ पढ़ा रही हैं। इस प्रकार मतदान को एक उत्सव के रूप मनाने हेतु वातावरण का निर्माण कर रही हैं।

विशेषकर कम मतदान प्रतिशत वाले क्षेत्रों में जीविका दीदियाँ घर–घर भ्रमण करते हुए उनसे संवाद करती हैं और इन परिवारों को मतदान के बारे में संपूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं। साथ ही साथ उन्हें मतदाता पर्ची एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता के बारे में भी बताती हैं। जीविका दीदियाँ लोगों को निष्पक्ष, भयमुक्त वातावरण और बिना किसी लोभ तथा जाति–धर्म से प्रभावित हुए बिना मतदान करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। इसके लिए जीविका द्वारा विस्तृत दिशा–निर्देश निर्गत किए गए हैं। इसके तहत सभी स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों एवं संकुल संघों की बैठकों में जीविका मित्रों एवं जीविका कर्मियों द्वारा स्वयं उपस्थित होकर मतदाता जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही सामुदायिक संगठनों एवं जीविका मित्रों को मतदाता जागरूकता एवं महिलाओं के वोट प्रतिशत में अधिकता होने पर प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की गई है। राज्य कार्यालय से लेकर प्रखंड स्तर के सभी कर्मियों द्वारा प्रभावी रूप से जागरूकता कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त निर्वाचक सूची में महिला लिंगानुपात बढ़ाने हेतु जीविका दीदियों द्वारा छूटे हुए महिला मतदाताओं एवं नए मतदाताओं का प्रपत्र तैयार कर इसे प्रखंड कार्यालय में जमा कराने का कार्य किया गया। इससे निर्वाचक सूची में बड़ी संख्या में महिला मतदाताओं का नाम दर्ज हुआ है। इस पहल से राज्य में निर्वाचक सूची में महिला मतदाताओं की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है।

जीविका दीदियों की उपरोक्त पहल से मतदान में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है साथ ही जागरूकता का स्तर भी बढ़ा है। इसका परिणाम है कि अधिक संख्या में महिलाएँ मतदान केंद्रों तक पहुँच रही हैं और कतारबद्ध होकर मतदान प्रक्रिया में हिस्सा ले रही हैं। जीविका दीदियों का यह प्रयास लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में सार्थक कदम साबित हो रहा है।

जीविका से जुड़कर बढ़ा आत्मविश्वास

जीविका परियोजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह में जोड़कर उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है। मधेपुरा जिला के मुरलीगंज प्रखंड स्थित पकीलपार गाँव की रहने वाली लिपि देवी जीविका समूह से जुड़कर आज आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनी है। पूर्व में लिपि देवी की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति बेहद खराब थी। पति की आँख खराब हो जाने के कारण उनके घर पर संकट छा गया था। आय का कोई साधन नहीं था। ऐसे में लिपि देवी को अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ा था।

इसी बीच, जीविका कर्मी एवं सामुदायिक उत्प्रेरक के प्रोत्साहन पर वह वर्ष 2013 में शिव शक्ति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। वह समूह की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने लगी। इससे उनमें सामूहिक सहयोग की भावना विकसित हुई और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा। अपने घर की आमदनी बढ़ाने के लिए वह स्वयं खेती करने लगी और गाय भी पालने लगी। समूह से ऋण लेकर उन्होंने अपने पति की आँख का इलाज करवाया। धीरे–धीरे उनकी सेहत में सुधार होने लगा। आँख ठीक हो जाने के बाद वह भी काम पर जाने लगे। समूह में जुड़ाव के बाद लिपि दीदी को भी घर से बाहर निकलने का अवसर मिला। उनकी कार्यशैली को देखते हुए उनका चयन ग्राम संगठन द्वारा सामुदायिक संसाधन सेवी के रूप में किया गया। वह अपने ग्राम संगठन की ओर से सामुदायिक संसाधन सेवी के रूप में काम करती है। समूह अथवा ग्राम संगठन स्तर पर कोई समस्या आने पर वह उसके सामाधान हेतु आगे बढ़कर कार्य करती है।

लिपि देवी का कहना है कि जीविका समूह में जुड़ने से उनका क्षमतावर्धन हुआ है। इससे वह कई प्रकार के कार्यों से जुड़कर आय अर्जित करने में सक्षम हुई है। वह पर्यावरण संरक्षण में भी अपना योगदान दे रही है। उन्होंने जीविका के माध्यम से पौधारोपण किया है और अपने घर के आस–पास आम एवं आंवला के पेड़ लगाए हैं। वह अपने परिवार का अच्छी तरह भरण–पोषण कर रही है और बच्चों को पढ़ा रही है। उनके दो बच्चें हैं। एक लड़का, जो इस बार मैट्रिक परीक्षा पास कर चुका है और एक बेटी की शादी हो चुकी है। वर्तमान में उसके परिवार की मासिक आमदनी 20,000 रुपये से अधिक है। वह अपने परिवार के साथ अब खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही है।

रीना देवी को मिला समूह से सहारा

रीना देवी बांका जिला अंतर्गत फुल्लीडूमर प्रखंड के खेसर पंचायत स्थित दसुआ गाँव की रहने वाली है। दुर्घटना के कारण उसके पति भैरव पंडित का देहांत हो गया था। इस कारण परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेदारी अकेले रीना देवी के ऊपर आ गयी थी। लेकिन आमदनी का कोई जरिया नहीं होने के कारण वह बहुत परेशान और चिंतित रहती थी। उनके पास कोई सहारा नहीं था। रीना देवी अपने चार बच्चों– दो बेटा और दो बेटी का परवरिश करने एवं उन्हें पढ़ाने में असमर्थ थी। घर की रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति करना भी संभव नहीं हो पा रहा था।

अपनी दयनीय स्थिति के बीच वह जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। इसके बाद वह समूह की बैठकों में नियमित रूप से जाने लगी। अपनी जरूरतों के वक्त वह समूह से लेन–देन करने लगी। उन्होंने समूह से ऋण लेकर एक किराना दुकान शुरू किया। इनके कुशल व्यवहार एवं दुकान में सामानों की उपलब्धता होने से धीरे–धीरे दुकान पर ग्राहकों की भीड़ बढ़ने लगी। बह दुकान अच्छी तरह चला रही है। वर्तमान में इनकी औसत आय करीब 10,000 रुपये प्रतिमाह है। दुकान की आय से उन्होंने समूह से लिए ऋण की वापसी कर दी है। अब वह दुकान की कमाई से अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही है और कुछ बचत भी करती है। वह अपने बच्चे को अच्छी तरह पढ़ा रही है। इनके पास अपना कुछ जमीन भी है, जिसमें वह खेती भी करती है। रीना दीदी आज अपना व्यवसाय शुरू कर बहुत खुश है। जीविका के माध्यम से इन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं का भी लाभ मिला है। इस प्रकार बुरे वक्त में जीविका का सहारा मिलने से रीना देवी का जीवन संवर गया है। अब वह आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार को तरक्की की राह पर अगे बढ़ा रही है।

मिंता दीदी की आत्मनिर्भरता की कहानी

सारण जिला के दिघवारा प्रखण्ड अंतर्गत भोलेनाथ जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य मिंता देवी ने एक साधारण महिला से एक उद्यमी महिला के रूप में अपनी पहचान बनाई है। मिंता देवी बस्ती जलाल पंचायत अंतर्गत दुर्गा जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य है। इनके पति दिल्ली में रहकर मजदूरी करते थे। जिससे उनके पूरे परिवार का भरण–पोषण होता था। मगर वर्ष 2020 के अप्रैल माह में देश व्यापी लॉक डाउन की वजह से इनके पति की नौकरी चली गई थी। अचानक बेरोजगार हो जाने से उनके समक्ष संकट आ गया था। उन्हें ऐसी विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ा जब इनके घर में दो वक्त की रोटी पर भी आफत हो गई थी। ऐसे समय में जीविका समूह उनके लिए सहारा बना।

मिंता देवी ने अपने समूह से 10 हजार रुपए ऋण लेकर प्रिंटिंग मशीन खरीदा और फोटोकॉपी करने का कार्य शुरू किया। इससे थोड़ी–बहुत आमदनी होने लगी। इससे उनकी परिस्थिति में सुधार होने लगा। उन्होंने समूह से लिए ऋण की वापसी कर दी। दीदी का घर मुख्य बाजार के पास होने के कारण माँग के अनुरूप ग्राहक को सेवा नहीं दे पा रही थी। अत: उन्होंने अप्रैल 2023 में समूह से पुन: 20,000 रुपए ऋण लिया एवं घर से कुछ पूंजी लगाकर एक बड़ा प्रिंटिग मशीन और एक लैपटॉप ख़रीदा। इससे दुकान में वह प्रिंटिंग एवं फोटोकॉपी का कार्य करने लगी है। इसके अलावा यहां विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन फॉर्म भरना, जाति, आय एवं आवासीय प्रमाणपत्र हेतु आवेदन करना तथा आधार एवं पैनकार्ड से संबंधित ऑनलाइन कार्य करती है। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के कार्यों की वजह से उनकी दुकान की आमदनी बढ़ गई है। इस दुकान से मिंता देवी प्रतिदिन लगभग 800 से 1000 रुपए की कमाई कर लेती है। इससे उनके परिवार का भरण–पोषण अच्छी तरह हो रहा है। अपने व्यवसाय का संचालन करने से मिंता दीदी का आत्मविश्वास काफी बढ़ गया है। साथ ही वह आत्मनिर्भर बन गई है।

आइसक्रीम फैक्ट्री ने दिया रोजगार

शिवहर जिले के पुरनहिया प्रखंड के सुदूर गाँव हथसार की रहने वाली गीता दीदी अपने गाँव और समाज के लिए एक नज़ीर हैं। उन्होंने एक सफल महिला उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

गीता दीदी वर्ष 2017 से हीना जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी है। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने दो भैंस खरीदी थी। भैंस का दूध बेचकर उन्हें अच्छी कमाई हो जाती थी। परंतु परिवार की आय बढ़ाने के लिए उनके पति पंजाब में काम करते थे। वहीं वर्ष 2020 में कोरोना की वजह से पूरे देश में लॉक डाउन लग गया था। इससे उनका काम बंद हो गया और वह वहीं फंसकर रह गए थे। ऐसी परिस्थिति को देखते हुए गीता दीदी ने निर्णय लिया था कि वह अपना व्यवसाय शुरू करेगी और अपने पति को भी इस व्यवसाय में लगाएगी। इसके बाद गीता ने समूह की मदद से घर पर आइसक्रीम फैक्ट्री की शुरुआत की। इससे उनके पति घर लौटकर आ गए एवं इसमें काम करने लगे। धीरे–धीरे आइसक्रीम की बिक्री होने लगी। गीता दीदी ने बताया कि उसके मायके में उसके पिताजी के पास आइसक्रीम की फैक्ट्री थी। वहीं पर उन्होंने यह काम सीखा था। वर्तमान में 18 आइसक्रीम ठेला के माध्यम से आइसक्रीम की बिक्री की जा रही है। सागर ब्रांड से उनका आइसक्रीम आज पूरे जिले में प्रसिद्ध है। इस प्रकार आइसक्रीम फैक्ट्री से प्रतिमाह उन्हें लाख रुपए महीने तक की आमदनी होने लगी है।

गीता देवी अपने व्यवसाय को और अधिक बढ़ाना चाहती है। इसी कड़ी उन्हें जीविका के माध्यम से प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम (पीएमएफएमई) सीड कैपिटल योजना के तहत चालीस हजार रुपए का ऋण प्राप्त हुआ। इसके अलावा इनक्यूबेशन कार्यक्रम के अंतर्गत भी गीता दीदी का चयन किया गया है। इस योजना के तहत उन्हें तीन लाख रुपये का ऋण प्राप्त होगा। इनमें से 75 हजार रुपए का पहला किस्त उन्हें प्राप्त हो चुका है। इस राशि से इन्होंने डीप फ्रीज, स्टेबलाइजर और कच्चे माल की खरीदारी की है। गीता दीदी अपने इस व्यवसाय का संचालन कर काफी खुश है। गीता दीदी के आइसक्रीम फैक्ट्री से 20 से 25 परिवार जुड़कर रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने साबित कर दिया है कि अगर मौक़ा मिले तो महिलाएँ हर क्षेत्र में कामयाबी हासिल कर सकती है। आज वह सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है।

बैंक सखी से गांवों में आसानी से मिल रही हैं बैंकिंग सेवाएँ

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं की पहुँच आसान बनाने में जीविका दीदियाँ उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। जिले में कई जीविका दीदियाँ बैंक सखी के रूप में कार्य करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में सुगमतापूर्वक बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करा रही हैं। बैंक सखी के द्वारा गाँव के लोगों का बचत खाता खोलने, रुपये जमा करने या बचत खाते से रुपये की निकासी करने, फिक्सड डिपॉजिट करने, बीमा करवाने एवं किसी भी प्रकार के बिल का भुगतान करने आदि की सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं। इससे जिले के दूर–दराज स्थित गाँव के लोगों को बैंक से संबंधित कार्यों के लिए अब शहर स्थित बैंक शाखाओं या अन्य केन्द्रों का चक्कर लगाने की जरूरत नहीं पड़ती है। बैंक सखी के रूप में कार्यरत दीदियों को इस कार्य से प्रति माह अच्छी आय भी प्राप्त हो रही है।

भागलपुर जिले की कुल 242 पंचायतों में से वर्तमान समय में 142 पंचायतों में बैंक सखी कार्यरत हैं। इन सभी बैंक सखियों को आरसेटी के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। जिलें में कार्यरत बैंक सखियों को यूको बैंक–आरसेटी के द्वारा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग ऐंड फाइनेंस (आईआईबीएफ) का छह दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कराया गया है। प्रशिक्षण के उपरांत प्रमाणीकता परीक्षा दिलवाकर उन्हें प्रमाणपत्र उपलब्ध कराया गया है। इस प्रशिक्षण में उन्हें बैंकिंग सेवाओं और इसकी कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी गई है। सभी बैंक सखियों के द्वारा बैंकिंग मानक के अनुसार बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है।

भागलपुर जिला के कहलगाँव प्रखंड की रहने वाली अरुणा हीना दिसंबर 2022 से बैंक सखी के रूप में कार्य कर रही है। बैंक सखी के रूप में काम करते हुए उन्होंने आज एक सशक्त महिला के रूप में अपनी पहचान बनायी है। अरुणा हीना के ग्राहक सेवा केंद्र पर प्रतिदिन 40–50 लोग वित्तीय लेन–देन करने के लिए आते हैं। पिछले एक वर्ष में वह अपने ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से 17 करोड़ 97 लाख रुपये से ज्यादा का वित्तीय लेन–देन कर चुकी है। प्रतिमाह औसतन 1820 लेन–देन कर लेती है। ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन करने से अरुणा का आत्मविश्वास काफी बढ़ा है। वहीं इस कार्य से उन्हें प्रतिमाह औसतन 13 से 15 हजार रुपये की आय अर्जित हो रही है। इससे उनका परिवार आर्थिक रूप से सबल हुआ है।

इसी तरह खरीक प्रखंड की आरती कुमारी फरवरी 2023 से बैंक सखी के रूप में कार्य कर रही है। वह ग्रामीण परिवारों को सभी प्रकार की बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराती है। इससे गाँव के लोगों को बैंकिंग संबंधी काम के लिए शहर स्थित बैंक आने की जरूरत नहीं होती है। आरती अब तक कुल 1 करोड़ 14 लाख 7 हजार रुपये का लेन–देन कर चुकी है। इससे वह प्रतिमाह 8 से 9 हजार रुपये की आय अर्जित कर लेती है। इस प्रकार जिले में बैंक सखी के रूप में कार्यरत जीविका दीदियाँ लोगों को बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करा रही है। साथ ही साथ वह स्वयं भी आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार